

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, द थियोलॉजी ऑफ ल्यूक-एक्ट्स, सत्र 8, द चर्च इन ल्यूक, द न्यू टेस्टामेंट पीपल ऑफ गॉड, भाग 1

यह ल्यूक-एक्ट्स के धर्मशास्त्र पर अपने शिक्षण में डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन हैं। यह सत्र 8 है, रॉबर्ट ए. पीटरसन, चर्च इन ल्यूक, द न्यू टेस्टामेंट पीपल ऑफ गॉड, भाग 1।

हम चर्च, न्यू टेस्टामेंट पीपल ऑफ गॉड पर अपनी कुछ सामग्री के साथ ल्यूक और धर्मशास्त्र पर अपने व्याख्यान जारी रखते हैं। ल्यूक का सुसमाचार. ल्यूक में चर्च.

एक प्रस्तावना के साथ, ल्यूक ने थियोफिलस को सक्षम करने के लिए डिज़ाइन किए गए अपने सुसमाचार की शुरुआत की, जिसे पुस्तक समर्पित है, उन चीज़ों के बारे में आश्चर्य होने, उद्धृत करने, जो हमारे बीच पूरी हो चुकी हैं। लूका 1:1, लूका 1:1. ये यीशु के जीवन की घटनाएँ हैं, जो उनके गर्भाधान और जन्म से शुरू होकर, उनके वचन और कर्म के मंत्रालय के माध्यम से जारी रहीं, और उनकी मृत्यु, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण में समाप्त हुईं।

अर्थात्, ल्यूक चर्च के प्रभु और उद्धारकर्ता और पापियों के लिए उनके द्वारा लाए गए उद्धार की बात करता है, ताकि वे परमेश्वर के लोगों से संबंधित हो सकें। वह अपने सुसमाचार को उसी तरह से समाप्त करता है, अपने अनुयायियों को याद दिलाता है कि धर्मग्रंथ ने उसकी मृत्यु, पुनरुत्थान और यरूशलेम से शुरू होने वाले सभी राष्ट्रों के लिए पश्चाताप और क्षमा के संदेश की घोषणा की भविष्यवाणी की थी। लूका 24:47.

ल्यूक अपने प्रेरितों के काम की पुस्तक की ओर इशारा करता है जब वह अपने शिष्यों से कहता है कि वे उसके गवाह हैं जिन्हें गवाही के लिए सशक्त बनाने के लिए भगवान द्वारा पवित्र आत्मा भेजने के लिए यरूशलेम में इंतजार करना चाहिए। निःसंदेह, अधिनियमों की शुरुआत पेंटेकोस्ट में होने वाली घटना से होती है। ल्यूक के सुसमाचार के अंत में, यीशु ने अपने शिष्यों को आशीर्वाद दिया और, उद्धारण, स्वर्ग में ले जाया गया।

यह सुसमाचार और प्रेरितों के काम को एक साथ जोड़ता है और प्रेरितों के काम में दर्ज सबसे पहली घटना, यीशु के स्वर्गारोहण की ओर इशारा करता है। इस प्रकार लूका अपने प्रेरितों के काम में दो पुस्तकों के रूप में देखता है जो एक साथ संबंधित हैं। सुसमाचार बेथलहम से यरूशलेम की ओर जाता है, जहाँ यीशु ने चर्च की स्थापना की, जबकि प्रेरितों के काम में उसके प्रेरितों द्वारा यरूशलेम से पृथ्वी के छोर तक सुसमाचार का प्रचार करने के बारे में बताया गया है, ताकि अधिक से अधिक लोग, जिनमें गैर-यहूदी भी शामिल हैं, चर्च में शामिल हो सकें और मसीह की आराधना कर सकें, प्रेरितों के काम 1:8। हम लूका के सुसमाचार में सात घटनाओं की जाँच करेंगे जो नए नियम के परमेश्वर के लोगों, इस्राएलियों और गैर-यहूदियों के लिए एक आधार तैयार करती हैं, लूका 2:25 से 32।

मैं पद 22 से शुरू करता हूँ। और जब मूसा की व्यवस्था के अनुसार उनके शुद्धिकरण का समय आया, तो वे उसे, बालक यीशु को, प्रभु के सामने प्रस्तुत करने के लिए यरूशलेम ले आए। जैसा कि प्रभु की व्यवस्था में लिखा है, हर नर जो पहले गर्भ खोलता है, प्रभु के लिए पवित्र कहलाएगा और प्रभु की व्यवस्था में बताए अनुसार एक जोड़ा कबूतर या दो बच्चे कबूतर की बलि चढ़ाएगा।

यरूशलेम में शिमोन नाम एक मनुष्य था, और वह धर्मी और भक्त था, और इस्राएल की शान्ति की बाट जोहता था, और पवित्र आत्मा उस पर था। और पवित्र आत्मा द्वारा उस पर यह प्रगट किया गया था कि प्रभु के मसीह को देखे बिना वह मृत्यु को नहीं देखेगा। और वह आत्मा में मन्दिर में आया, और जब माता-पिता बालक यीशु को व्यवस्था की रीति के अनुसार उसके लिये करने को लाए, तो उस ने उसे गोद में उठाया, और परमेश्वर का धन्यवाद करके कहा, हे प्रभु, अब तू दे रहा है तेरा दास तेरे वचन के अनुसार कुशल से चला जाएगा।

क्योंकि मेरी आँखों ने तेरे उद्धार को देखा है, जिसे तू ने सब लोगों के सामने तैयार किया है, कि वह अन्यजातियों के लिये प्रकाश की ज्योति और तेरे निज लोग इस्राएल के लिये महिमा का कारण हो। और उसके पिता और उसकी माता ने उसके विषय में कही गई बातों से अचम्भा किया। और शमौन ने उनको आशीर्वाद दिया, और उसकी माता मरियम से कहा, देख, यह बालक इस्राएल में बहुतों के गिरने और उठने के लिये और विरोध किए जानेवाले चिन्ह के लिये ठहराया गया है, और तेरी अपनी आत्मा को भी तलवार से छेदा जाएगा, कि बहुत से मनो के विचार प्रगट हों।

यूसुफ और मरियम ईश्वरीय लेकिन स्पष्ट रूप से गरीब इस्राएली थे। आठवें दिन बच्चे का खतना होने के बाद, जैसा कि परमेश्वर ने कहा था (उत्पत्ति 17:12), उन्होंने उसका नाम यीशु रखा। प्रभु ने उन्हें बचाया, जैसा कि स्वर्गदूतों ने उन्हें निर्देश दिया था।

लूका 1:21, लूका 1:31. कानून की आवश्यकता है कि एक महिला जिसने बेटे को जन्म दिया है वह खतने से पहले सात दिनों तक अशुद्ध थी, लैव्यिकस 12:1 से 5। जोसेफ और मैरी ने उसके शुद्धिकरण के लिए जो पेशकश की, उससे पता चला कि वे गरीब थे, लैव्यिकस के छंद 6 से 13 12 अभी भी। इसके बाद ल्यूक दो गवाहों को प्रस्तुत करता है, जैसा कि हॉवर्ड मार्शल ने लिखा है, दूसरे गवाह अन्ना का जिक्र करते हुए, न्यू इंटरनेशनल ग्रीक टेस्टामेंट कमेंटरी श्रृंखला में ल्यूक पर मार्शल की टिप्पणी को उद्धृत करते हुए कहा कि, "उसकी उपस्थिति गवाही देने के लिए आवश्यक दो गवाहों में से दूसरे को प्रदान करती है।" यीशु का महत्व, व्यवस्थाविवरण 19:15।

दो-तीन गवाहों की गवाही से मामला वैसे ही निपट जायेगा। हमारी चिंता पहले गवाह शिमोन को लेकर है। वह एक धर्मात्मा व्यक्ति है जिस पर पवित्र आत्मा विश्राम करता था, जो ल्यूक द्वारा इज़राइल की सांत्वना के रूप में संदर्भित मसीहा के आगमन की तलाश में था।

शिमोन को अलौकिक मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, क्योंकि पवित्र आत्मा द्वारा उसे यह बताया गया था कि जब तक वह प्रभु के मसीह को नहीं देख लेता, तब तक वह मृत्यु को नहीं देखेगा, लूका 2:22। आत्मा ने शिमोन को मंदिर में भी उसी समय निर्देशित किया, जब यूसुफ और मरियम यीशु को पेश कर रहे थे। शिमोन ने यूसुफ और मरियम को देखा, शिशु यीशु को अपनी बांहों में लिया,

परमेश्वर की स्तुति की, और कहा, हे प्रभु, अब तू अपने वचन के अनुसार अपने दास को शांति से विदा करता है, क्योंकि मेरी आँखों ने तेरा उद्धार देखा है, जिसे तू ने सब लोगों के सामने तैयार किया है, कि वह अन्यजातियों के लिए प्रकाश का प्रकाश और तेरे लोगों इस्राएल के लिए महिमा का प्रकाश हो, लूका 2:30 से 32 तक।

परमेश्वर ने शिमोन के मरने से पहले उसे मसीहा को देखने देने का अपना वादा पूरा किया था। उसके शब्द शक्तिशाली हैं। मेरी आँखों ने तुम्हारा उद्धार देखा है।

छोटा शिशु यीशु संसार का उद्धारकर्ता था। वह वयस्कता में जाएगा, पाप रहित जीवन जिएगा, पापियों के लिए क्रूस पर मरेगा और फिर से जी उठेगा, हमारे शत्रुओं पर अपनी जीत की घोषणा करेगा। इसके अलावा, यहाँ लूका के सुसमाचार में आरंभ में, यीशु को अन्यजातियों के लिए प्रकाश और इस्राएल के लिए महिमा के रूप में कहा गया है।

पद 31 और 32. लूका स्पष्ट करता है कि पद 31 में सभी लोगों का मतलब पद 32 में अन्यजाति भी है। मेरी आँखों ने तुम्हारा उद्धार देखा है जिसे तुमने सभी लोगों की उपस्थिति में तैयार किया है, अन्यजातियों के लिए प्रकाश के लिए एक ज्योति और अपने लोगों, इस्राएल के लिए महिमा के लिए।

इसमें दोनों, सभी लोग शामिल हैं, बेशक, दोनों यहूदी, लेकिन गैर-यहूदी, राष्ट्र भी शामिल हैं। पहली शताब्दी में अन्यजातियों की दुर्दशा के आलोक में ही इसकी उचित सराहना की जा सकती है। थिएलमैन अंतर्दृष्टि प्रदान करता है जब वह फ्रैंक थिएलमैन को चित्रित करता है, इफिसियों की टिप्पणी, पृष्ठ 157, "थिएलमैन, पॉल का इफिसियों 2:11 और 12 में सुसमाचार के आगमन से पहले अन्यजातियों की निराशाजनक स्थिति का वर्णन वहाँ दिया गया है।

यहाँ, इज़राइल भगवान के लोग और भगवान के वचन का भंडार था। सुसमाचार के आने से पहले, केवल इस्राएल की सीमाओं के भीतर के लोगों को ही परमेश्वर के उस क्रोध से मुक्ति की आशा थी जो वह अवज्ञाकारियों पर बरसाएगा। खतनारहित अन्यजातियों को परिभाषा के अनुसार इस लोगों और इस आशा से बाहर रखा गया था, और इसलिए वे निराशा की विशेष रूप से निराशाजनक स्थिति में थे।

वे संसार में परमेश्वर और आशाहीन थे। लूका-प्रेरितों का एक मुख्य उद्देश्य यह दिखाना है कि परमेश्वर ने अपनी योजना में निराशा और निराशा की स्थिति को उलट दिया है। अब, विश्वास करने वाले अन्यजाति और यहूदी परमेश्वर के लोगों का हिस्सा बन गए हैं।

ल्यूक ने अपनी प्रारंभिक कथा में ही नियमों के बीच इस महत्वपूर्ण बदलाव की ओर इशारा किया है। ल्यूक पर अपनी टिप्पणी के पहले खंड में बाँक ने स्पष्ट किया है, "इस संदर्भ में, यह स्पष्ट है कि अन्यजातियों को रहस्योद्घाटन के प्राप्तकर्ता के रूप में चित्रित किया गया है। ल्यूक के सुसमाचार और कृत्यों के बाकी हिस्सों से पता चलता है कि अन्यजातियों ने समान रूप से भाग लिया।

यीशु सभी मानवजाति को मुक्ति दिलाता है, उन्हें परमेश्वर के मार्ग पर प्रकाश देता है, उद्धारण समाप्त होता है। इसलिए, लूका दो में शिमोन के शब्दों में ही पाठकों को लूका की सार्वभौमिक प्रवृत्ति से परिचित करा दिया गया है। यीशु दुनिया के उद्धारकर्ता हैं, जिसमें गैर-यहूदी भी शामिल हैं।

जाहिर है, शिमोन के शब्दों से यूसुफ और मरियम हैरान हो गए। श्लोक 33 में, इसके बाद वह उन दोनों को आशीर्वाद देता है और मरियम को एक मिश्रित संदेश भेजता है। देखो, यह बच्चा इस्राएल में बहुतों के पतन और उत्थान के लिए नियुक्त किया गया है और एक संकेत के लिए जिसका विरोध किया जाता है ताकि बहुत से दिलों के विचार प्रकट हो सकें।

लेकिन वह वहाँ भी शामिल है, और एक तलवार तुम्हारी आत्मा को भी छेद देगी। फिर से, हम यहाँ पाते हैं, यीशु के जीवन की शुरुआत में, आने वाली चीज़ों का पूर्वाभास होता है। शिमोन भविष्यवाणी करता है कि यीशु का जीवन और मंत्रालय इस्राएलियों के बीच संघर्ष को भड़काएगा।

वह यहूदियों को शाप और आशीर्वाद दोनों देगा, जो उसे अस्वीकार करते हैं, उनके लिए परमेश्वर के न्याय का शाप, और जो उस पर विश्वास करते हैं, उनके लिए उद्धार का आशीर्वाद। श्लोक 34, इसके अलावा, यीशु के जीवन और मृत्यु के परिणामस्वरूप, एक तलवार मरियम की आत्मा को छेद देगी। वास्तव में, जब उसने अपने बेटे को सूली पर चढ़ाया, तो उसे बहुत पीड़ा हुई, यूहन्ना 19:23।

हॉवर्ड मार्शल ने अपने लूका इतिहासकार और धर्मशास्त्री में साझा किया, "यह हमारी थीसिस है कि मोक्ष का विचार लूका के धर्मशास्त्र की कुंजी प्रदान करता है" पृष्ठ 92। हम सहमत हैं और कहते हैं कि मोक्ष परमेश्वर के नए नियम के लोगों के लिए आधार है। यहाँ लूका के सुसमाचार की शुरुआत में, शिशु यीशु को मोक्ष के रूप में घोषित किया गया है।

शिमोन की भविष्यवाणी में, हम सीखते हैं कि उद्धार अन्यजातियों तक फैलेगा। परमेश्वर के नए नियम के लोगों में यहूदी और अन्यजाति शामिल होंगे जो यीशु पर विश्वास करते हैं और इस प्रकार उद्धार का अनुभव करते हैं। हमारा दूसरा अंश मनुष्यों के मछुआरे हैं, लूका 5:4 से 10।

5:1 एक अवसर पर जब भीड़ उस पर दबाव डाल रही थी, कि वह शब्द सुने, अर्थात् परमेश्वर का वचन सुने, तो वह गन्नेसरत झील के किनारे खड़ा था, और उस ने झील के किनारे दो नावें देखीं, परन्तु मछुआरे उनके पास नहीं थे। और उनके पास से निकलकर अपने जाल धो रहे थे। नावों में से एक पर चढ़कर, जो शमौन की थी, उस ने उस से भूमि से थोड़ा हट जाने को कहा। और वह बैठ गया, और नाव पर से लोगों को उपदेश देने लगा।

और जब वह बोल चुका, तो शमौन से कहा, गहरे पानी में उतर, और मछलियाँ पकड़ने के लिये अपने जाल डाल। शमौन ने उत्तर दिया, स्वामी, हम ने रात भर परिश्रम किया और कुछ न खाया, परन्तु तेरे कहने से मैं जाल डालूंगा। और जब उन्होंने ऐसा किया, तो उन्होंने बड़ी संख्या में मछलियाँ घेर लीं और उनके जाल टूटने लगे।

उन्होंने अपने साथियों को संकेत दिया कि वे दूसरी नाव पर आकर हमारी सहायता करें। और वे आए और दोनों नावें इतनी भर गईं कि वे डूबने लगीं। परन्तु जब शमौन पतरस ने यह देखा, तो वह यीशु के घुटनों पर गिरकर कहने लगा, हे प्रभु, मेरे पास से चले जाओ, क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूँ।

क्योंकि वह और उसके सब साथी इतनी मछलियाँ पकड़कर चकित हुए थे। और जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना भी जो शमौन के साथी थे, चकित हुए। तब यीशु ने शमौन से कहा, मत डर; अब से तू मनुष्यों को पकड़ा करेगा।

जब वे अपनी नावें किनारे पर ले आए, तो सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिए। यीशु गलील झील के किनारे परमेश्वर का वचन सिखा रहा था, और भीड़ उस पर दबाव डाल रही थी। लूका 5:1. ल्यूक के लिए परमेश्वर का वचन एक महत्वपूर्ण विषय है, क्योंकि, “यह प्रत्येक में केवल एक बार प्रकट होता है। शब्द, परमेश्वर का वचन मत्ती 15:6 और मरकुस 7:13 में केवल एक बार प्रकट होता है। लेकिन लगभग 20 उदाहरणों में, परमेश्वर का वचन, वे शब्द, ल्यूक-एक्ट्स में सुसमाचार की उद्घोषणा की विशेषता बताते हैं। जेम्स एडवर्ड्स, गॉस्पेल अर्कोर्डिंग टु ल्यूक, पृष्ठ 152। यीशु ने दो खाली नावें देखीं जो झील के किनारे पर थीं।

मछुआरे रात को मछलियाँ पकड़ रहे थे और उन्हें कुछ नहीं मिला और वे अपने जाल साफ कर रहे थे। यीशु शमौन पतरस की नाव पर चढ़े और उस से भूमि निकालने को कहा, और उसने वैसा ही किया। और यीशु नाव पर बैठ कर लोगों को उपदेश देने लगा।

अपनी शिक्षा समाप्त करने के बाद, यीशु ने शमौन से कहा कि वह नाव को गहरे पानी में ले जाए और ट्रैमेल, ट्रैमेल जाल, ट्रैमेल को नीचे उतारे। ये तीन परतों से बने भारी-भरकम जाल थे, जिनका इस्तेमाल रात में मछली पकड़ने के लिए किया जाता था। शमौन, जो एक पेशेवर मछुआरा था, ने रात भर की अपनी बेकार कोशिशों के कारण हल्का-फुल्का विरोध किया।

लेकिन शमौन भी एक नौसिखिया शिष्य था, और अपनी सहज प्रवृत्ति के बावजूद, उसने यीशु की आज्ञा मानी। परिणाम आश्चर्यजनक था। जब उन्होंने ऐसा किया, तो उन्होंने बड़ी संख्या में मछलियाँ पकड़ीं।

उनके जाल फटने लगे। उन्होंने दूसरी नाव में बैठे अपने साथियों को इशारा किया कि वे आकर उनकी मदद करें। वे आए और अपनी नावों को इतना भर लिया कि वे डूबने लगीं (आयत 6 और 7)। पतरस और उसके साथी यह देखकर चौंक गए।

यह महत्वपूर्ण है कि ल्यूक अन्य शिष्यों का उल्लेख करे, ऐसा न हो कि हम इस पेरिकोप को केवल यीशु और पीटर के बारे में देखें। हमेशा की तरह, वह नेता है, लेकिन वह अकेला नहीं है; वह उस समूह का हिस्सा है जिसका ईश्वर सशक्त रूप से उपयोग करेगा। पतरस ने विश्वास के साथ उत्तर दिया, यीशु के सामने घुटने टेककर चिल्लाया, मेरे पास से चले जाओ। मैं एक पापी आदमी हूँ। हे प्रभु, मुझ से दूर हो जाओ क्योंकि मैं एक पापी मनुष्य हूँ। हे प्रभो।

पीटर की प्रतिक्रिया के कम से कम तीन तत्व उल्लेखनीय हैं। सबसे पहले, वह यीशु और अपने बीच के महान अंतर को पहचानता है और यीशु से उसकी मदद करने के लिए कहता है। दूसरा, वह पापपूर्णता को स्वीकार करता है, वह अपनी पापपूर्णता और अयोग्यता को स्वीकार करता है। यह हमें सबसे पहले आश्चर्यचकित करता है क्योंकि यीशु के कार्य ने पवित्रता नहीं, बल्कि दिव्य मार्गदर्शन और शक्ति प्रदर्शित की।

फिर भी, यीशु के दिव्य कार्य का सामना करते हुए, पीटर को उसके पापों का दोषी ठहराया गया। तीसरा, पतरस उसे प्रभु कहता है। यहां इस शब्द का उपयोग वाचिक में पारंपरिक सर और देवत्व की स्वीकृति के बीच में आता है।

हालाँकि कुछ व्याख्याकार यहाँ शब्द की पूरी ईसाई समझ देखते हैं, इसलिए एडवर्ड्स, ल्यूक के अनुसार सुसमाचार, हम असहमत हैं और ग्रीन के पक्ष में हैं कि यहाँ, उद्धरण, पीटर यीशु में ईश्वर की एजेंसी को पहचानता है। ग्रीन, गॉस्पेल ऑफ ल्यूक, पृष्ठ 233। यीशु तब अपने चमत्कार को एक शिक्षण क्षण में बदल देता है जब वह पीटर से कहता है, डरो मत; अब से, तुम लोगों को पकड़ोगे, श्लोक 10।

मछली पकड़ने वाला परमेश्वर के लिए पुरुषों और महिलाओं को पकड़ने वाला बन जाएगा। यीशु के शिष्यों के प्रशिक्षण के इस प्रारंभिक बिंदु पर, उसकी नज़र सुसमाचार प्रचार की ओर है। ये शब्द केवल प्रेरितों के काम में प्रेरितिक उपदेश में ही पूरे होंगे, लेकिन यीशु पहले से ही उन्हें सुसमाचार प्रचार के महत्व के बारे में बताते हैं।

पद 11 में पतरस, अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना की प्रतिक्रिया उल्लेखनीय है; जब वे अपनी नावें किनारे पर ले आए, तो सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिए। उनका यीशु, ल्यूक 4, 38, और 39 के साथ पहले संपर्क था, लेकिन अपनी आजीविका और मछलियों की बड़ी पकड़ को छोड़कर, सब कुछ छोड़कर यीशु का पीछा करना आश्चर्यजनक है। बाख ने बुद्धिमानी से ल्यूक 5, 4 से 10 के संदेश का सार प्रस्तुत किया।

पुनः, ल्यूक पर बॉक का पहला खंड, ल्यूक का पहला खंड टिप्पणी, 460 से 462, "यीशु ने पीटर से वादा किया कि उसका व्यवसाय क्या होगा। वादा, विशेष रूप से, यह है कि पीटर लोगों को पकड़ लेगा। मुद्दा पकड़ने, इकट्ठा करने और बचाव का विचार है।

इस प्रकार इस घटना के सभी गवाहों के लिए शिष्यत्व का जीवन शुरू होता है। तट पर लौटने पर, वे अपने जहाज पीछे छोड़ देते हैं। यहां विषय बहुवचन है, इसलिए पीटर के अलावा अन्य लोग चले जाते हैं।

उनके जीवन की प्राथमिकता अब मछली पकड़ना नहीं बल्कि यीशु का अनुसरण करना है। लूका 14:27, और लोगों के लिए मछली पकड़ना। ये शिष्य प्रेरितों के काम की पुस्तक के महान गवाह बनेंगे।

लूका 5:4 से 11 के अनुसार, पापी लोग यीशु के प्रति वैसा ही व्यवहार करके परमेश्वर के लोग बन जाते हैं जैसा पतरस और उसके साथी शिष्यों ने किया था। हमें चमत्कारों का अनुभव करने या

पतरस के शब्दों का उपयोग करने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन चर्च में शामिल होने के लिए, हमें यीशु को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में मानना चाहिए। माना कि पतरस का विश्वास नवजात था और उसे बढ़ना था, लेकिन उसका विश्वास वास्तविक था, जैसा कि यीशु के प्रति उसकी तत्काल प्रतिक्रिया और उससे भी महत्वपूर्ण बात, उसके प्रति उसके निरंतर समर्पण से प्रमाणित होता है।

सच्चे शिष्य सब कुछ छोड़कर यीशु का अनुसरण करते हैं। वह उनके जीवन में पहला स्थान रखता है। दूसरा, मुख्य संदेश चर्च के लिए सुसमाचार प्रचार की आवश्यकता है।

परमेश्वर अपने राज्य के लिए पापी, स्वार्थी मनुष्यों को पुरुषों और महिलाओं के मछुआरों में बदल देता है। परमेश्वर के नए नियम के सदस्य पापियों से प्यार करते हैं और उनके साथ खुशखबरी साझा करने के अवसरों के लिए प्रार्थना करते हैं। परमेश्वर के नए नियम के लोग, ल्यूक में तीसरे नंबर पर, क्षमा किए गए पापी हैं।

लूका 7:36 से 50. लूका 7:36. फरीसियों में से एक ने यीशु से अपने साथ भोजन करने को कहा, और वह फरीसी के घर में गया और मेज पर बैठ गया।

और देखो, उस नगर की एक पापिनी स्त्री ने जब यह जाना कि वह फरीसी के घर में भोजन करने बैठा है, तो संगमरमर के पात्र में इत्र लाई और उसके पाँवों के पास पीछे खड़ी होकर रोती हुई उसके पाँवों को आँसुओं से भिगोने और अपने सिर के बालों से पोंछने लगी और उसके पाँवों को चूमकर उन पर इत्र मला। जब उस फरीसी ने, जिसने उसे बुलाया था, यह देखा, तो मन ही मन सोचने लगा, यदि यह मनुष्य भविष्यद्वक्ता होता तो जान लेता कि यह कौन और कैसी स्त्री है जो उसे छू रही है, क्योंकि वह तो पापिनी है। यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि हे शमौन, मुझे तुझ से कुछ कहना है।

उसने उत्तर दिया, “हे गुरु, कहो।” एक साहूकार के दो देनदार थे, एक पर पाँच सौ दीनार और दूसरे पर पचास दीनार थे।

जब वे चुका न सके, तो उसने उन दोनों का कर्ज़ माफ कर दिया। अब पूछो, उनमें से कौन उससे ज़्यादा प्यार करेगा? शमौन ने उत्तर दिया, शायद उसी का जिसका उसने ज़्यादा कर्ज़ माफ किया था। यीशु ने उससे कहा, “तूने ठीक फैसला किया है।”

फिर उस स्त्री की ओर फिरकर उसने शमौन से कहा, क्या तू इस स्त्री को देखता है? मैं तेरे घर में आया, और तू ने मेरे पांव धोने के लिए पानी नहीं दिया, परन्तु इस ने मेरे पांव आँसुओं से भिगोए और अपने बालों से पोंछे हैं। तू ने मुझे चूमा नहीं, परन्तु जब से मैं आया, तब से यह मेरे पांव चूमना नहीं छोड़ी है। तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं मला, परन्तु इस ने मेरे पाँवों पर इत्र मला है।

इसलिये मैं तुझ से कहता हूँ, कि इसके पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए, क्योंकि इसने बहुत प्रेम किया; पर जिसका थोड़ा क्षमा हुआ, वह थोड़ा प्रेम करता है। तब उस ने उस से कहा, तेरे पाप क्षमा हुए। तब उसके साथ भोजन करनेवाले आपस में कहने लगे, यह कौन है, जो पाप भी क्षमा करता है? और उस ने स्त्री से कहा, तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है, कुशल से जा।

यीशु ने पापियों के साथ समय बिताया, और न केवल पापियों का तिरस्कार किया, उन्होंने इस फरीसी की तरह, उद्धरण न देने वाले सम्माननीय लोगों के साथ भी समय बिताया। शमौन नाम के एक फरीसी ने यीशु को सार्वजनिक भोजन के लिए आमंत्रित किया, लूका 7:36। निजी भोजन से अलग, सार्वजनिक भोजन के दरवाजे खुले होते थे और लोग बस अंदर आकर चर्चा सुन सकते थे।

नगर की एक पापिनी स्त्री ने ऐसा ही किया। सार्वजनिक भोजन में, लोग सोफ़े पर करवट के बल लेटते थे, उनके पैर मेज़ से दूर की ओर होते थे। वह स्त्री महंगे इत्र का एक अलबास्टर जार ले गई, यीशु के पैरों के पीछे खड़ी हो गई, उन्हें अपने आंसुओं से धोया, और उन्हें अपने बालों से सुखाया, चूमते हुए और उन्हें इत्र से अभिषेक करते हुए, श्लोक 37 और 38।

फरीसी को यह देखकर बुरा लगा कि यीशु ने ऐसी पापी स्त्री को छूने दिया, क्योंकि फरीसी ऐसा कुछ नहीं करेगा। लूका के आरंभिक प्रकरणों से, फरीसी को "कानूनी पालन के निरीक्षक, जो पापियों से खुद को दूर रखते हैं" के रूप में जाना जाता है, ग्रीन, लूका का सुसमाचार, पृष्ठ 308। हालाँकि उसने अपने विचारों को अपने तक ही सीमित रखा, उसने निष्कर्ष निकाला कि यीशु कोई भविष्यवक्ता नहीं था, क्योंकि निश्चित रूप से एक भविष्यवक्ता उस स्त्री की पहचान जानता होगा, पद 39।

जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, हम देखते हैं कि फरीसी दोनों मामलों में गलत था, जैसा कि मार्शल बताते हैं, "यीशु फरीसी के विचारों को पढ़ने और उन्हें जवाब देने में सक्षम है, और साथ ही, न केवल यीशु एक पापी महिला के स्पर्श को स्वीकार करने के लिए तैयार है, बल्कि वह यह भी सुझाव देता है कि उसकी क्रिया उसके मेजबान की तुलना में उसके लिए अधिक स्वागत योग्य है।" मार्शल, ल्यूक पर टिप्पणी, पृष्ठ 309, 310। यीशु ने फरीसी से कहा, जिसका नाम शमौन था, अब प्रकट हो गया था, जिसका नाम शमौन अब प्रकट हो गया था, कि उसके पास उसे बताने के लिए कुछ था, और शमौन ने उसे आगे बढ़ने के लिए कहा।

फिर यीशु ने एक ऋणदाता और दो देनदारों का एक छोटा सा दृष्टांत बताया। पहले पर लगभग दो साल की मज़दूरी, 500 दीनार, और दूसरे पर दो महीने की मज़दूरी, 50 दीनार बकाया थी। कोई भी देनदार अपना कर्ज़ नहीं चुका पाया, और लेनदार ने कृपापूर्वक उन दोनों को माफ़ कर दिया, लूका 7:41, 42।

यीशु ने फिर शमौन से पूछा कि कौन सा कर्जदार दयालु ऋणदाता से ज़्यादा प्यार करेगा। शमौन ने जवाब दिया कि मुझे लगता है कि वह जिसे उसने ज़्यादा माफ़ किया है, श्लोक 43। यीशु ने शमौन को उसके जवाब के लिए सराहा और अपना ध्यान उस महिला की ओर लगाया। यीशु ने बताया कि शमौन ने सामाजिक शिष्टाचार के मामलों की उपेक्षा की थी।

उसने यीशु के पैर नहीं धुलवाए थे। उसने यीशु का स्वागत चूमकर नहीं किया, और उसने यीशु के सिर पर जैतून का तेल नहीं लगाया। इसके विपरीत, एक महिला ने अपने आँसुओं से यीशु के पैर धोए और उन्हें अपने बालों से पोंछा।

वह उसके पैरों को चूमती रही और उसके पैरों पर महँगे इत्र लगाती रही, श्लोक 44, 45। यीशु ने अपने दृष्टांत का सार बताया। श्लोक 47: 'इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, उसके बहुत से पाप क्षमा हुए, क्योंकि उसने बहुत प्रेम किया, परन्तु जिसका थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है।'

वह उस कर्ज़दार के समान है जिसने दृष्टान्त में अधिक से अधिक कर्ज़ माफ़ कर दिया। हालाँकि, किसी को कम माफ़ करना भी कम प्यार दिखाता है। इन शब्दों के साथ, यीशु ने साइमन को इस दृष्टान्त को अपने ऊपर लागू करने के लिए आमंत्रित किया।

आश्चर्यजनक रूप से, यीशु ने तब महिला से कहा, तुम्हारे पाप क्षमा हो गए हैं, पद 48। पिछले अवसर की तरह, पर्यवेक्षक आंतरिक रूप से आश्चर्यचकित थे। लूका 5:21 से तुलना करें, कि यीशु ने पापों को क्षमा करने का दावा किया था जैसा कि केवल ईश्वर ही कर सकता है, श्लोक 49।

यीशु ने तब कहा, तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें बचाया है, शांति से जाओ, श्लोक 50। प्रकरण यहीं समाप्त होता है, और यीशु के कई दृष्टान्तों की तरह, यह कहानी भी खुली है। लूका 15:25 से 32, खोए हुए पुत्र, उड़ाऊ पुत्र का दृष्टांत, और लूका 18:9 से 14, फरीसी और चुंगी लेने वाले की तुलना करें।

हालाँकि, इसके लिए साइमन, अन्य श्रोताओं और पाठकों की प्रतिक्रिया की आवश्यकता है। प्रथम दृष्टया पेरिकोप को पढ़ने पर, कोई यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि महिला यीशु के प्रति अपनी भक्ति के कारण बच गई थी, और यह निष्कर्ष एक गलती होगी। दृष्टांत ने दिखाया कि ऋणों की क्षमा प्रेम और कृतज्ञता की सापेक्ष प्रतिक्रियाओं से पहले होती है, और यीशु ने स्वयं समझाया, उसके कई पाप क्षमा कर दिए गए हैं।

इसीलिए उसने बहुत प्यार किया, श्लोक 47. इस प्रकार, परमेश्वर और मसीह के लिए प्रेम यह जानने के लिए एक आभारी प्रतिक्रिया है कि पापों को क्षमा कर दिया गया है। शमौन फरीसी और पापी महिला की कहानी नए नियम में परमेश्वर के लोगों के बारे में हमारी समझ को बढ़ाती है।

लूथर ने सही कहा कि दुनिया में केवल दो तरह के लोग थे, और वे दोनों पापी थे, क्षमा न किये गये और क्षमा किये गये। यह कहानी दिखाती है कि भगवान की कृपा हर किसी तक पहुँचती है, और यीशु के पास कहानी में पापी महिला सहित, तिरस्कृत लोगों के लिए दिल था। धार्मिक लोगों के लिए अच्छा होगा कि वे साइमन के आत्म-तुष्ट रवैये से बचें, जो इस बात से हैरान था कि यीशु ने एक वेश्या को उसे छूने की अनुमति दी थी।

चर्च क्षमा किए गए पापियों से बना है जो यीशु से बहुत प्यार करते हैं क्योंकि उसने उन्हें बहुत माफ़ कर दिया है। हमारा अगला अनुच्छेद वे हैं जो प्रतिदिन अपना क्रूस उठाते हैं, लूका 9:23 से 27, हमारा चौथा अनुच्छेद। ल्यूक 9:23 से 27, एक छोटा सा।

यीशु ने लूका 9:22 में अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की थी। मनुष्य के पुत्र को बहुत दुख उठाना होगा और पुरनियों और मुख्य याजकों और शास्त्रियों द्वारा अस्वीकार किया जाना होगा और मार डाला जाना होगा, और तीसरे दिन जी उठना होगा। फिर हमारा दृष्टांत आता है, लूका 9:23 से 27,

और उसने सभी से कहा, यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए और मेरे पीछे हो ले।

क्योंकि जो कोई अपना प्राण खोना चाहे, वह उसे खोएगा; परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने आप को खो दे या उसका कुछ भाग खो दे, तो उसे क्या लाभ? क्योंकि जो कोई मुझ से और मेरी बातों से लजाएगा, मनुष्य का पुत्र भी जब अपनी, और पिता की, और पवित्र स्वर्गदूतों की महिमा सहित आएगा, तब उस से लजाएगा। परन्तु मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो यहां खड़े हैं, उन में से कितने ऐसे हैं, कि जब तक परमेश्वर का राज्य न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद न चखेंगे।

इसके बाद रूपांतरण होता है। यीशु के यह स्वीकार करने के बाद, पतरस के यह स्वीकार करने के बाद कि यीशु मसीहा है, परमेश्वर का मसीहा, लूका 9:20, और यीशु ने अपने दुःख, मृत्यु और पुनरुत्थान की भविष्यवाणी की थी, श्लोक 21 और 22, उसने क्रूस के संदेश को अपने शिष्यों के दैनिक जीवन में लागू किया। यीशु ने अपने पीछे आने वाले लोगों के बारे में बात की, जो उसके पीछे चलने के विचार से मेल खाता है।

यीशु उन सभी को चुनौती देते हैं जो उनका अनुसरण करना चाहते हैं। यदि कोई मेरा अनुसरण करना चाहता है, पद 23, यदि कोई मेरे पीछे आना चाहता है, तो उसे अपने आप से इन्कार करना होगा, अपना क्रूस उठाना होगा और मेरे पीछे आना होगा। यीशु का अनुसरण करने के लिए तीन तत्व हैं।

सबसे पहले, लोगों को स्वयं का इन्कार करना चाहिए, यह अवधारणा केवल यहीं नए नियम में दिखाई देती है। इसका अर्थ है ईश्वर को स्वयं से आगे रखना, स्वयं को ईश्वर के प्रति समर्पित करना। इसमें अपने स्वयं के प्रयासों के माध्यम से मोक्ष अर्जित करने के किसी भी विश्वास, ऑटो-सोटिरिज़्म की किसी भी धारणा को छोड़ना शामिल है।

इसके बजाय, इसका अर्थ है मुक्ति के लिए पूरी तरह से मसीह पर भरोसा करना और केवल उन्हीं के प्रति सर्वोच्च निष्ठा की प्रतिज्ञा करना। यीशु के अगले शब्द बताते हैं कि स्वयं को नकारने का क्या मतलब है। दूसरा, यीशु के संभावित अनुयायियों को हर दिन अपना क्रूस उठाना होगा।

इज़राइल में लोग रोमन क्रूस पर चढ़ने को देखने के अपने अनुभव से जानते थे कि इसका शाब्दिक अर्थ क्या है। जब उन्होंने किसी को अपनी क्रॉस बीम को फाँसी की जगह पर ले जाते देखा, तो उन्हें पता चल गया कि वह वापस नहीं आएगा। वह मरने वाला था।

क्या क्रूस उठाने का मतलब यीशु के लिए शहीद होना है? ज़रूरी नहीं है, लेकिन इसमें उसके लिए मरने की इच्छा शामिल है जो हमारे लिए मरा ताकि हम अनंत जीवन प्राप्त कर सकें। क्रूस उठाना शाब्दिक नहीं बल्कि रूपक है। इसका अर्थ है स्वयं के प्रति मरना, स्वयं को नकारना।

यीशु इस बात पर जोर देते हैं कि यह प्रतिदिन किया जाना चाहिए। यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे एक शिष्य हमेशा के लिए कर सकता है। बल्कि, यह ईसाई जीवन को स्वयं और अपनी इच्छाओं के लिए मरने और मुख्य रूप से ईश्वर के लिए जीने के जीवन के रूप में वर्णित करता है।

ग्रीन कहते हैं, व्यक्ति को दैनिक आधार पर ऐसे जीना है जैसे कि उसे क्रूस पर चढ़ाकर मौत की सजा दी गई हो। तब शिष्यों को यीशु की पीड़ा में उसकी पहचान करने के लिए कहा जाता है। ग्रीन, गॉस्पेल ऑफ़ ल्यूक, पृष्ठ 373।

तीसरा, उन्हें न केवल यीशु से शुरुआत करनी चाहिए, बल्कि उनका अनुसरण करना चाहिए, उनके उदाहरण का अनुसरण करते हुए उनके शिष्य बने रहना चाहिए। मार्शल बताते हैं, मुद्दा यह है कि जो शिष्य क्रूस उठाता है वह वही कर रहा है जो यीशु करता है। वह गुरु के समान ही अनुसरण कर रहा है।

ल्यूक 374 पर मार्शल की टिप्पणी। यीशु आगे व्यंग्यपूर्ण शब्द बोलते हैं जो एक पहेली की तरह लगते हैं। जो कोई अपना जीवन बचाना चाहेगा वह उसे खो देगा।

परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा। स्वयं के लिए जीकर किसी का जीवन बचाना यीशु के अनुयायियों की विशेषता नहीं है। इसके बजाय, वे उसके प्रति प्रेम और सेवा में अपना जीवन खो देते हैं।

विडम्बना यह है कि ऐसा करने पर, वे वास्तव में जीवन प्राप्त करते हैं, अभी और हमेशा के लिए अनन्त जीवन। बाख ने नोट किया कि यह विचार कृत्यों में व्यक्त पश्चाताप और विश्वास के समान है। यीशु आगे कहते हैं, यदि कोई व्यक्ति पूरी दुनिया को प्राप्त कर लेता है और फिर भी खुद को खो देता है या खो देता है तो इससे उसे क्या लाभ होता है? श्लोक 25.

यह अलंकारिक प्रश्न यीशु के संदेश को पुष्ट करता है। मसीह के अलावा सब कुछ पाने का मतलब है अपना जीवन अभी बर्बाद करना और आने वाले युग में हमेशा के लिए खोना। फिर यीशु शिष्यत्व को युगांतशास्त्रीय शब्दों में प्रस्तुत करते हैं।

पद 26. जो कोई मुझसे और मेरे वचनों से लजाता है, क्या मनुष्य का पुत्र भी लजाएगा जब वह अपनी महिमा और पिता और पवित्र स्वर्गदूतों की महिमा में आएगा? मसीह को अस्वीकार करके उससे लजाना उद्धार की कमी की ओर इशारा करता है। कथित शिष्य जो उससे लजाते रहते हैं, वे बदले में उसके राजसी और विजयी वापसी पर उसके द्वारा अस्वीकार किए जाने का जोखिम उठाते हैं।

यीशु इस कठोर चेतावनी से हटकर उत्साहवर्धक शब्दों की ओर मुड़ते हैं। मैं तुमसे सच कहता हूँ, यहाँ कुछ ऐसे खड़े हैं जो तब तक मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे जब तक कि वे परमेश्वर के राज्य को न देख लें। श्लोक 27.

इन शब्दों ने व्याख्याकारों को उलझन में डाल दिया है। कुछ आलोचनात्मक विद्वान समझते हैं कि यीशु अपनी शीघ्र वापसी की भविष्यवाणी कर रहे थे, जो सच नहीं हुई। यह भी प्रासंगिक है कि लूका के सुसमाचार में अगले ही शब्द पीटर, जेम्स और जॉन के सामने यीशु के रूपांतरण को दर्शाते हैं।

हालाँकि व्याख्याकार यीशु के कथन को समझने में संघर्ष करते हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि इसकी पूर्ति को उनके रूपांतरण में पूर्वाभास के रूप में देखना सबसे अच्छा है जो उनकी मृत्यु, पुनरुत्थान और परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठने की ओर इशारा करता है, जो बदले में उनकी महिमा में दूसरे आगमन की ओर इशारा करता है। बाख यीशु के शब्दों को उनके पुनरुत्थान और महिमामंडन और प्रेरितों के काम 2 में मसीहा के रूप में सिंहासनारूढ़ होने में पूर्ण रूप से समझते हैं। जबकि रूपांतरण को इस बात का पूर्वावलोकन मानते हैं कि भविष्य में यीशु कब पृथ्वी पर अपने अधिकार को पूरी तरह से प्रकट करेंगे, जैसा कि लूका 21, 27 सुझाता है। बाख, लूका टिप्पणी का खंड एक 854 और 55।

ल्यूक 9, 23 से 27 हमें परमेश्वर के नए नियम के लोगों के बारे में क्या सिखाता है? यीशु प्रामाणिक शिष्यत्व की एक कठिन तस्वीर पेश करते हैं। वह अपने लोगों को समर्पित शिष्यों के रूप में वर्णित करते हैं जो अपने लिए नहीं बल्कि उनके लिए जीते हैं। भले ही इसका मतलब उनकी मृत्यु हो, परमेश्वर के लोग स्वयं मरते हैं और उसके लिए जीते हैं जो उनसे प्यार करता था और मरकर उन्हें पाप की गुलामी से मुक्त करता है।

जब मसीह दोबारा आएगा तो वह पिता और स्वर्गदूतों के सामने अपने लोगों का स्वामी होगा। परिणामस्वरूप, परमेश्वर के नए नियम के लोग हमेशा-हमेशा के लिए नई पृथ्वी पर अनन्त जीवन और महिमा प्राप्त करेंगे। अपने अगले व्याख्यान में, हम ल्यूक के सुसमाचार में इन अंशों में से कुछ का अध्ययन समाप्त करेंगे जो परमेश्वर के नए नियम के लोगों को प्रस्तुत करते हैं।

हम लूका 15:11 से 32, उड़ाऊ पुत्र के दृष्टांत में अनुग्रह प्राप्तकर्ताओं को देखेंगे। हम उन लोगों को देखेंगे जिन्हें यीशु ल्यूक 19, एक से 10 में बचाता है, जो जक्की की कहानी है। और अंत में, हम ल्यूक 24 श्लोक 44 से 49 के उस अत्यंत महत्वपूर्ण अध्याय में यीशु को गवाही देते हुए देखेंगे।

यह ल्यूक एक्ट्स के धर्मशास्त्र पर अपने शिक्षण में डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन हैं। यह सत्र संख्या आठ है, रॉबर्ट ए पीटरसन, ल्यूक में चर्च, भगवान के नए नियम के लोग भाग एक।